International Journal of Sanskrit Research 2019; 5(6): 142-145

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2019; 5(6): 142-145
© 2019 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 10-09-2019
Accepted: 12-10-2019

नारायण गुप्ता
(1) शोधच्छात्र, नेहरू मैमोरियल शिव नारायण दास स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बदायूँ, उत्तर प्रदेश, भारत
(2) महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
नारायण गुप्ता
(1) शोधच्छात्र, नेहरू मैमोरियल शिव नारायण दास स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बदायूँ, उत्तर प्रदेश, भारत
(2) महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत

काशिकाके द्वितीय अध्यायके उदाहरणोंका प्रक्रियानिर्देश (यथासादृश्ये, यावदवधरणे, सुप्प्रतिना मात्रार्थे, अक्षशलाकासंख्याः परिणा, अपपरिबहिरञ्चवः पञ्चम्या, आङ् मर्यादाभिविध्योः, लक्षणेनाभिप्रती आभिमुख्ये, अनुर्यत्समया, यस्य चायामः, पारे मध्ये षष्ठ्या वा, सङ्ख्या वंश्येन, नदीभिश्च, अन्यपदार्थे च संज्ञायाम्, द्विगुश्च)

नारायण गुप्ता

सारांश
मेरे शोधप्रबन्धका शीर्षक 'काशिकाके द्वितीय अध्यायके उदाहरणोंका प्रक्रियानिर्देश' है। वस्तुतः काशिकाकी स्वकीय शैली यह है कि उसमें जो उदाहरण दिये जाते हैं उनका प्रक्रियानिर्देश प्रायः किया ही नहीं जाता है और यदि कहींपर किया भी जाता है तो वह इतना निगूढ होता है कि उतनेमात्रसे उदाहरणोंकी प्रक्रिया स्पष्ट नहीं हो पाती है और प्रक्रियाको समझे विना शास्त्रकी चरितार्थता असम्भव है। यही कारण मेरे इस शोधप्रबन्धकी अपरिहार्यताको प्रदर्शित करता है जो कि विना प्रक्रियानिर्देशके सम्भव नहीं है। मेरा यह प्रयास उसी दिशामें है।

कूटशब्दः काशिका, यथासादृश्ये, यावदवधारणे, सुप्प्रतिना मात्रार्थे, अक्षशलाकासंख्याः परिणा, अपपरिबहिरञ्चवः पञ्चम्या, आङ् मर्यादाभिविध्योः, लक्षणेनाभिप्रती आभिमुख्ये, अनुर्यत्समया, यस्य चायामः, पारे मध्ये षष्ठ्या वा, संख्या वंश्येन, नदीभिश्च, अन्यपदार्थे च संज्ञायाम्, द्विगुश्च, प्रक्रिया

प्रस्तावना

प्रक्रियानिर्देश

यथावृद्धं ब्राह्मणानामन्त्रयस्व
लौकिक विग्रह– येये वृद्धाः।
अलौकिक विग्रह– वृद्ध आम् यथा।
वृद्ध आम् यथा– 'यथासादृश्ये' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/1/7) इस सूत्रसे वृद्ध आम् यथा इसकी अव्ययीभावसमासंज्ञा हुई। 'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/4/71) इस सूत्रसे आम् इसका लुक्संज्ञक अदर्शन हुआ–
वृद्ध यथा– 'उपसर्जनं पूर्वम्' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/2/30) इस सूत्रसे यथा इसका पूर्वनिपात हुआ–
यथा वृद्ध– 'प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/3/46) इस सूत्रसे यथा वृद्ध इससे पर प्रथमा विभक्ति, एकवचन, सु यह प्रत्यय हुआ–
यथा वृद्ध सु– 'नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/4/83) इस सूत्रसे सु इसके स्थानमें अम् यह आदेश हुआ–
यथा वृद्ध अम्– 'अमि पूर्वः' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 6/1/103) इस सूत्रसे अ अ इन दोनोंके स्थानमें पूर्वरूप (अ) यह एकादेश हुआ–
यथा वृद्ध अ म्– यथावृद्धम्।। इति सिद्धम्।।
यावदमत्रं ब्राह्मणानामन्त्रयस्व
लौकिक विग्रह–यावन्ति अमत्राणि।
अलौकिक विग्रह– अमत्र आम् यावत्।
अमत्र आम् यावत्– 'यावदवधारणे' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/1/8) इस सूत्रसे अमत्र आम् यावत् इसकी अव्ययीभावसमासंज्ञा हुई। 'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/4/71) इस सूत्रसे आम् इसका लुक्संज्ञक अदर्शन हुआ–
अमत्र यावत्– 'उपसर्जनं पूर्वम्' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/2/30) इस सूत्रसे यावत् इसका पूर्वनिपात हुआ–

यावत् अमत्र– 'झलां जशोऽन्ते' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 8/2/39) इस सूत्रसे त् इसके स्थानमें जश् (द्) यह आदेश हुआ–
याव द् अमत्र– 'प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/3/46) इस सूत्रसे याव द् अमत्र इससे पर प्रथमा विभक्ति, एकवचन, सु यह प्रत्यय हुआ–
याव द् अमत्र सु– 'नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/4/83) इस सूत्रसे सु इसके स्थानमें अम् यह आदेश हुआ–
याव द् अमत्र अम्– 'अमि पूर्वः' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 6/1/103) इस सूत्रसे अ अ इन दोनोंके स्थानमें पूर्वरूप (अ) यह एकादेश हुआ–
याव द् अमत्र् अ म्– यावदमत्रम्।। इति सिद्धम्।।
शाकप्रति
लौकिक विग्रह– अस्त्यत्र किञ्चित् शाकम्।
अलौकिक विग्रह– शाक ङस् प्रति।
शाक ङस् प्रति– 'सुप्प्रतिना मात्रार्थे' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/1/9) इस सूत्रसे शाक ङस् प्रति इसकी अव्ययीभावसमासंज्ञा हुई। 'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/4/71) इस सूत्रसे ङस् इसका लुक्संज्ञक अदर्शन हुआ–
शाक प्रति– 'उपसर्जनं पूर्वम्' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/2/30) इस सूत्रसे शाक इसका पूर्वनिपात हुआ। 'प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/3/46) इस सूत्रसे शाक प्रति इससे पर प्रथमा विभक्ति, एकवचन, सु यह प्रत्यय हुआ–
शाक प्रति सु– 'अव्ययादाप्सुपः' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/4/82) इस सूत्रसे सु इसका लुक्संज्ञक अदर्शन हुआ–
शाक प्रति– शाकप्रति।। इति सिद्धम्।।
अक्षपरि
लौकिक विग्रह– अक्षेण इदं न तथा वृत्तं यथा पूर्वं जये।
अलौकिक विग्रह– अक्ष टा परि।
अक्ष टा परि– 'अक्षशलाकासंख्याः परिणा' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/1/10) इस सूत्रसे अक्ष टा परि इसकी अव्ययीभावसमासंज्ञा हुई। 'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/4/71) इस सूत्रसे टा इसका लुक्संज्ञक अदर्शन हुआ–
अक्ष परि– 'उपसर्जनं पूर्वम्' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/2/30) इस सूत्रसे अक्ष इसका पूर्वनिपात हुआ। 'प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/3/46) इस सूत्रसे अक्ष परि इससे पर प्रथमा विभक्ति, एकवचन, सु यह प्रत्यय हुआ–
अक्ष परि सु– 'अव्ययादाप्सुपः' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/4/82) इस सूत्रसे सु इसका लुक्संज्ञक अदर्शन हुआ–
अक्ष परि– अक्षपरि।। इति सिद्धम्।।
अपत्रिगर्तं वृषो देवः
लौकिक विग्रह– अप त्रिगर्तेभ्यः।
अलौकिक विग्रह– अप त्रिगर्त भ्यस्।
अप त्रिगर्त भ्यस्– 'विभाषापपरिबहिरञ्चवः पञ्चम्या' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/1/11) इस सूत्रसे अप त्रिगर्त भ्यस् इसकी अव्ययीभावसमासंज्ञा हुई। 'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/4/71) इस सूत्रसे भ्यस् इसका लुक्संज्ञक अदर्शन हुआ–
अप त्रिगर्त– 'उपसर्जनं पूर्वम्' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/2/30) इस सूत्रसे अप इसका पूर्वनिपात हुआ। 'प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/3/46) इस सूत्रसे अप त्रिगर्त इससे पर प्रथमा विभक्ति, एकवचन, सु यह प्रत्यय हुआ–
अप त्रिगर्त सु– 'नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/4/83) इस सूत्रसे सु इसके स्थानमें अम् यह आदेश हुआ–
अप त्रिगर्त अम्– 'अमि पूर्वः' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 6/1/103) इस सूत्रसे अ अ इन दोनोंके स्थानमें पूर्वरूप (अ) यह एकादेश हुआ–
अप त्रिगर्त् अ म्– अपत्रिगर्तम्।। इति सिद्धम्।।
आकुमारं यशः पाणिनेः
लौकिक विग्रह– आ कुमारेभ्यः।
अलौकिक विग्रह– आ कुमार भ्यस्।
आ कुमार भ्यस्– 'आङ् मर्यादाभिविध्योः' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/1/12) इस सूत्रसे आ कुमार भ्यस् इसकी अव्ययीभावसमासंज्ञा हुई। 'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/4/71) इस सूत्रसे भ्यस् इसका लुक्संज्ञक अदर्शन हुआ–
आ कुमार– 'उपसर्जनं पूर्वम्' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/2/30) इस सूत्रसे आ इसका पूर्वनिपात हुआ। 'प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/3/46) इस सूत्रसे आ कुमार इससे पर प्रथमा विभक्ति, एकवचन, सु यह प्रत्यय हुआ–
आ कुमार सु– 'नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/4/83) इस सूत्रसे सु इसके स्थानमें अम् यह आदेश हुआ–
आ कुमार अम्– 'अमि पूर्वः' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 6/1/103) इस सूत्रसे अ अ इन दोनोंके स्थानमें पूर्वरूप (अ) यह एकादेश हुआ–
आ कुमार् अ म्– आकुमारम्।। इति सिद्धम्।।
अभ्यग्नि शलभाः पतन्ति
लौकिक विग्रह– अग्निम् अभि (अग्निं लक्ष्यीकृत्य अभिमुखं पतन्ति)।
अलौकिक विग्रह– अग्नि अम् अभि।
अग्नि अम् अभि– 'लक्षणेनाभिप्रती आभिमुख्ये' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/1/13) इस सूत्रसे अग्नि अम् अभि इसकी अव्ययीभावसमासंज्ञा हुई। 'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/4/71) इस सूत्रसे अम् इसका लुक्संज्ञक अदर्शन हुआ–
अग्नि अभि– 'उपसर्जनं पूर्वम्' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/2/30) इस सूत्रसे अभि इसका पूर्वनिपात हुआ–
अभि अग्नि– 'इको यणचि' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 6/1/74) इस सूत्रसे इ इसके स्थानमें यण् (य्) यह आदेश हुआ–
अभ् य् अग्नि– 'प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/3/46) इस सूत्रसे अभ् य् अग्नि इससे पर प्रथमा विभक्ति, एकवचन, सु यह प्रत्यय हुआ–
अभ् य् अग्नि सु– 'अव्ययादाप्सुपः' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/4/82) इस सूत्रसे सु इसका लुक्संज्ञक अदर्शन हुआ–
अभ् य् अग्नि– अभ्यग्नि।। इति सिद्धम्।।
अनुवनम् अशनिर्गतः
लौकिक विग्रह– वनं समया।
अलौकिक विग्रह– वन ङस् अनु।
वन ङस् अनु– 'अनुर्यत्समया' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/1/14) इस सूत्रसे वन ङस् अनु इसकी अव्ययीभावसमासंज्ञा हुई। 'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/4/71) इस सूत्रसे ङस् इसका लुक्संज्ञक अदर्शन हुआ–
वन अनु– 'उपसर्जनं पूर्वम्' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/2/30) इस सूत्रसे अनु इसका पूर्वनिपात हुआ–
अनु वन– 'प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/3/46) इस सूत्रसे अनु वन इससे पर प्रथमा विभक्ति, एकवचन, सु यह प्रत्यय हुआ–
अनु वन सु– 'नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/4/83) इस सूत्रसे सु इसके स्थानमें अम् यह आदेश हुआ–
अनु वन अम्– 'अमि पूर्वः' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 6/1/103) इस सूत्रसे अ अ इन दोनोंके स्थानमें पूर्वरूप (अ) यह एकादेश हुआ–
अनु वन् अ म्– अनुवनम्।। इति सिद्धम्।।
अनुगङ्गं वाराणसी
लौकिक विग्रह– गङ्गायाः आयामेन।
अलौकिक विग्रह– गङ्गा ङस् अनु।
गङ्गा ङस् अनु– 'यस्य चायामः' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/1/15) इस सूत्रसे गङ्गा ङस् अनु इसकी अव्ययीभावसमासंज्ञा हुई। 'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/4/71) इस सूत्रसे ङस् इसका लुक्संज्ञक अदर्शन हुआ–

गङ्गा अनु– 'उपसर्जनं पूर्वम्' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/2/30) इस सूत्रसे अनु इसका पूर्वनिपात हुआ–
अनु गङ्गा– 'ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 1/2/47) इस सूत्रसे आ इसके स्थानमें ह्रस्वसंज्ञक (अ) यह आदेश हुआ–
अनु गङ्ग् अ– 'प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/3/46) इस सूत्रसे अनु गङ्ग् अ इससे पर प्रथमा विभक्ति, एकवचन, सु यह प्रत्यय हुआ–
अनु गङ्ग् अ सु– 'नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/4/83) इस सूत्रसे सु इसके स्थानमें अम् यह आदेश हुआ–
अनु गङ्ग् अ अम्– 'अमि पूर्वः' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 6/1/103) इस सूत्रसे अ अ इन दोनोंके स्थानमें पूर्वरूप (अ) यह एकादेश हुआ–
अनु गङ्ग् अ म्– अनुगङ्गम्।। इति सिद्धम्।।
पारेगङ्गम्
लौकिक विग्रह– गङ्गायाः पारम्।
अलौकिक विग्रह– गङ्गा ङस् पार सु।
गङ्गा ङस् पार सु– 'पारे मध्ये षष्ठ्या वा' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/1/17) इस सूत्रसे गङ्गा ङस् पार सु इसकी अव्ययीभावसमासंज्ञा विकल्पसे हुई तथा अ इसके स्थानमें ए यह आदेश भी हुआ–
गङ्गा ङस् पार् ए सु– 'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/4/71) इस सूत्रसे ङस् सु इन दोनोंका लुक्संज्ञक अदर्शन हुआ–
गङ्गा पार् ए– 'उपसर्जनं पूर्वम्' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/2/30) इस सूत्रसे पार् ए इसका पूर्वनिपात हुआ–
पार् ए गङ्गा– 'ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 1/2/47) इस सूत्रसे आ इसके स्थानमें ह्रस्वसंज्ञक (अ) यह आदेश हुआ–
पार् ए गङ्ग् अ– 'प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/3/46) इस सूत्रसे पार् ए गङ्ग् अ इससे पर प्रथमा विभक्ति, एकवचन, सु यह प्रत्यय हुआ–
पार् ए गङ्ग् अ सु– 'नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/4/83) इस सूत्रसे सु इसके स्थानमें अम् यह आदेश हुआ–
पार् ए गङ्ग् अ अम्– 'अमि पूर्वः' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 6/1/103) इस सूत्रसे अ अ इन दोनोंके स्थानमें पूर्वरूप (अ) यह एकादेश हुआ–
पार् ए गङ्ग् अ म्– पारेगङ्गम्।। इति सिद्धम्।।
गङ्गापारम्
लौकिक विग्रह– गङ्गायाः पारम्।
अलौकिक विग्रह– गङ्गा ङस् पार सु।
गङ्गा घस् पार सु– 'पारे मध्ये षष्ठ्या वा' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/1/17) इस सूत्रसे गङ्गा ङस् पार सु इसकी अव्ययीभावसमासंज्ञा विकल्पसे प्राप्त हुई। अतः जिस पक्षमें गङ्गा ङस् पार सु इसकी अव्ययीभावसमासंज्ञा नहीं हुई उस पक्षमें 'षष्ठी' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/2/8) इस सूत्रसे गङ्गा ङस् पार सु इसकी षष्ठीतत्पुरुषसमाससंज्ञा हुई। 'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/4/71) इस सूत्रसे ङस् सु इन दोनोंका लुक्संज्ञक अदर्शन हुआ–
गङ्गा पार– 'उपसर्जनं पूर्वम्' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/2/30) इस सूत्रसे गङ्गा इसका पूर्वनिपात हुआ। 'प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/3/46) इस सूत्रसे गङ्गा पार इससे पर प्रथमा विभक्ति, एकवचन, सु यह प्रत्यय हुआ–
गङ्गा पार सु– 'अतोऽम्' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 7/1/24) इस सूत्रसे सु इसके स्थानमें अम् यह आदेश हुआ–
गङ्गा पार अम्– 'अमि पूर्वः' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 6/1/103) इस सूत्रसे अ अ इन दोनोंके स्थानमें पूर्वरूप (अ) यह एकादेश हुआ–
गङ्गा पार् अ म्– गङ्गापारम्।। इति सिद्धम्।।
द्विमुनि व्याकरणस्य
लौकिक विग्रह– द्वौ मुनी (व्याकरणस्य वंश्यौ)।
अलौकिक विग्रह– द्वि औ मुनि औ।
द्वि औ मुनि औ– 'सङ्ख्या वंश्येन' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/1/18) इस सूत्रसे द्वि औ मुनि औ इसकी अव्ययीभावसमासंज्ञा हुई। 'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/4/71) इस सूत्रसे औ औ इन दोनोंका लुक्संज्ञक अदर्शन हुआ–
द्वि मुनि– 'उपसर्जनं पूर्वम्' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/2/30) इस सूत्रसे द्वि इसका पूर्वनिपात हुआ। 'प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/3/46) इस सूत्रसे द्वि मुनि इससे पर प्रथमा विभक्ति, एकवचन, सु यह प्रत्यय हुआ–
द्वि मुनि सु– 'अव्ययादाप्सुपः' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/4/82) इस सूत्रसे सु इसका लुक्संज्ञक अदर्शन हुआ–
द्वि मुनि– द्विमुनि।। इति सिद्धम्।।
सप्तगोदावरम्
लौकिक विग्रह– सप्तानां गोदावरीणां समाहारः।
अलौकिक विग्रह– सप्तन् जस् गोदावरी जस्।
सप्तन् जस् गोदावरी जस्– 'नदीभिश्च' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/1/19) इस सूत्रसे सप्तन् जस् गोदावरी जस् इसकी अव्ययीभावसमासंज्ञा हुई। 'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/4/71) इस सूत्रसे जस् जस् इन दोनोंका लुक्संज्ञक अदर्शन हुआ–
सप्तन् गोदावरी– 'उपसर्जनं पूर्वम्' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/2/30) इस सूत्रसे सप्तन् इसका पूर्वनिपात हुआ। 'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 8/2/7) इस सूत्रसे न् इसका लोपसंज्ञक अदर्शन हुआ–
सप्त गोदावरी– 'कृष्णोदक्पाण्डुपूर्वाया भूमेरच्प्रत्ययः स्मृतः। गोदावर्याश्च नद्याश्च सङ्ख्याया उत्तरे यदि' (वार्त्तिकपाठः) इस वार्त्तिकसे सप्त गोदावरी इससे पर समासान्त अच् (अ) यह प्रत्यय हुआ–
सप्त गोदावरी अ– 'यस्येति च' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 6/4/148) इस सूत्रसे ई इसका लोपसंज्ञक अदर्शन हुआ–
सप्त गोदावर् अ– 'प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/3/46) इस सूत्रसे सप्त गोदावर् अ इससे पर प्रथमा विभक्ति, एकवचन, सु यह प्रत्यय हुआ–
सप्त गोदावर् अ सु– 'नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/4/83) इस सूत्रसे सु इसके स्थानमें अम् यह आदेश हुआ–
सप्त गोदावर् अ अम्– 'अमि पूर्वः' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 6/1/103) इस सूत्रसे अ अ इन दोनोंके स्थानमें पूर्वरूप (अ) यह एकादेश हुआ–
सप्त गोदावर् अ म्– सप्तगोदावरम्।। इति सिद्धम्।।
उन्मत्तगङ्गम्
लौकिक विग्रह– उन्मत्ता गङ्गा यस्मिन् (देशे– संज्ञा, देशविशेषम्)।
अलौकिक विग्रह– उन्मत्ता सु गङ्गा सु।
उन्मत्ता सु गङ्गा सु– 'अन्यपदार्थे च संज्ञायाम्' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/1/20) इस सूत्रसे उन्मत्ता सु गङ्गा सु इसकी अव्ययीभावसमासंज्ञा हुई। 'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/4/71) इस सूत्रसे सु सु इन दोनोंका लुक्संज्ञक अदर्शन हुआ–
उन्मत्ता गङ्गा– 'उपसर्जनं पूर्वम्' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/2/30) इस सूत्रसे उन्मत्ता इसका पूर्वनिपात हुआ। 'स्त्रियाः पुंवद्भाषितपुंस्कादनूङ् समानाधिकरणे स्त्रियामपूरणीप्रियादिषु' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 6/3/33) इस सूत्रसे उन्मत्ता इसके स्थानमें उन्मत्त यह पुंवद्भाव आदेश हुआ–

उन्मत्त गङ्गा– 'ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 1/2/47) इस सूत्रसे आ इसके स्थानमें ह्रस्वसंज्ञक (अ) यह आदेश हुआ–
उन्मत्त गङ्ग् अ– 'प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/3/46) इस सूत्रसे उन्मत्त गङ्ग् अ इससे पर प्रथमा विभक्ति, एकवचन, सु यह प्रत्यय हुआ–
उन्मत्त गङ्ग् अ सु– 'नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/4/83) इस सूत्रसे सु इसके स्थानमें अम् यह आदेश हुआ–
उन्मत्त गङ्ग् अ अम्– 'अमि पूर्वः' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 6/1/103) इस सूत्रसे अ अ इन दोनोंके स्थानमें पूर्वरूप (अ) यह एकादेश हुआ–
उन्मत्त गङ्ग् अ म्– उन्मत्तगङ्गम्।। इति सिद्धम्।।
पञ्चराजम्
लौकिक विग्रह– पञ्चानां राज्ञां समाहारः।
अलौकिक विग्रह– पञ्चन् आम् राजन् आम्।
पञ्चन् आम् राजन् आम्– 'तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/1/50) इस सूत्रसे पञ्चन् आम् राजन् आम् इसकी द्विगुसमाससंज्ञा हुई। 'द्विगुश्च' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/1/22) इस सूत्रसे द्विगुसमासकी तत्पुरुषसमाससंज्ञा भी हुई। 'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/4/71) इस सूत्रसे आम् आम् इन दोनोंका लुक्संज्ञक अदर्शन हुआ–
पञ्चन् राजन्– 'उपसर्जनं पूर्वम्' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/2/30) इस सूत्रसे पञ्चन् इसका पूर्वनिपात हुआ। 'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 8/2/7) इस सूत्रसे न् इसका लोपसंज्ञक अदर्शन हुआ–
पञ्च राजन्– 'राजाहःसखिभ्यष्टच्' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 5/4/91) इस सूत्रसे पञ्च राजन् इससे पर समासान्त टच् (अ) यह प्रत्यय हुआ–
पञ्च राजन् अ– 'नस्तद्धिते' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 6/4/144) इस सूत्रसे अन् इसका लोपसंज्ञक अदर्शन हुआ–
पञ्च राज् अ– 'प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/3/46) इस सूत्रसे पञ्च राज् अ इससे पर प्रथमा विभक्ति, एकवचन, सु यह प्रत्यय हुआ–
पञ्च राज् अ सु– 'नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/4/83) इस सूत्रसे सु इसके स्थानमें अम् यह आदेश हुआ–
पञ्च राज् अ अम्– 'अमि पूर्वः' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 6/1/103) इस सूत्रसे अ अ इन दोनोंके स्थानमें पूर्वरूप (अ) यह एकादेश हुआ–
पञ्च राज् अ म्– पञ्चराजम्।। इति सिद्धम्।।
द्वयहः
लौकिक विग्रह– द्वयोः अह्नोः समाहारः।
अलौकिक विग्रह– द्वि ओस् अहन् ओस्।
द्वि ओस् अहन् ओस्– 'तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/1/50) इस सूत्रसे द्वि ओस् अहन् ओस् इसकी द्विगुसमाससंज्ञा हुई। 'द्विगुश्च' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/1/22) इस सूत्रसे द्विगुसमासकी तत्पुरुषसमाससंज्ञा भी हुई। 'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/4/71) इस सूत्रसे ओस् ओस् इन दोनोंका लुक्संज्ञक अदर्शन हुआ–
द्वि अहन्– 'उपसर्जनं पूर्वम्' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/2/30) इस सूत्रसे द्वि इसका पूर्वनिपात हुआ। 'इको यणचि' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 6/1/74) इस सूत्रसे इ इसके स्थानमें यण् (य्) यह आदेश हुआ–
द्व य् अहन्– 'राजाहःसखिभ्यष्च्' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 5/4/91) इस सूत्रसे द्व य् अहन् इससे पर समासान्त टच् (अ) यह प्रत्यय हुआ–
द्व य् अहन् अ– 'अह्नष्टखोरेव' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 6/4/145) इस सूत्रसे अन् इसका लोपसंज्ञक अदर्शन हुआ–
द्व य् अह् अ– 'प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/3/46) इस सूत्रसे द्व य् अह् अ इससे पर प्रथमा विभक्ति, एकवचन, सु (स्) यह प्रत्यय हुआ–
द्व य् अह् अ स्– 'ससजुषो रुः' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 8/2/66) इस सूत्रसे स् इसके स्थानमें रु (र्) यह आदेश हुआ–
द्व य् अह् अ र्– 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 8/3/15) इस सूत्रसे र् इसके स्थानमें विसर्ग (:) यह आदेश हुआ–
द्व य् अहः– द्वयहः।। इति सिद्धम्।।
पञ्चगवम्
लौकिक विग्रह– पञ्चानां गवां समाहारः।
अलौकिक विग्रह– पञ्चन् आम् गो आम्।
पञ्चन् आम् गो आम्– 'तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/1/50) इस सूत्रसे पञ्चन् आम् गो आम् इसकी द्विगुसमाससंज्ञा हुई। 'द्विगुश्च' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/1/22) इस सूत्रसे द्विगुसमासकी तत्पुरुषसमाससंज्ञा भी हुई। 'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/4/71) इस सूत्रसे आम् आम् इन दोनोंका लुक्संज्ञक अदर्शन हुआ–
पञ्चन् गो– 'उपसर्जनं पूर्वम्' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/2/30) इस सूत्रसे पञ्चन् इसका पूर्वनिपात हुआ। 'नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 8/2/7) इस सूत्रसे न् इसका लोपसंज्ञक अदर्शन हुआ–
पञ्च गो– 'गोरतद्धितलुकि' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 5/4/92) इस सूत्रसे पञ्च गो इससे पर समासान्त टच् (अ) यह प्रत्यय हुआ–
पञ्च गो अ– 'एचोऽयवायावः' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 6/1/75) इस सूत्रसे ओ इसके स्थानमें अव् यह आदेश हुआ–
पञ्च ग् अव् अ– 'प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/3/46) इस सूत्रसे पञ्च ग् अव् अ इससे पर प्रथमा विभक्ति, एकवचन, सु यह प्रत्यय हुआ–
पञ्च ग् अव् अ सु– 'नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 2/4/83) इस सूत्रसे सु इसके स्थानमें अम् यह आदेश हुआ–
पञ्च ग् अव् अ अम्– 'अमि पूर्वः' (अष्टाध्यायीसूत्रपाठः 6/1/103) इस सूत्रसे अ अ इन दोनोंके स्थानमें पूर्वरूप (अ) यह एकादेश हुआ–
पञ्च ग् अव् अ म्– पञ्चगवम्।। इति सिद्धम्।।

संदर्भ

1. अष्टाध्यायीसूत्रपाठः (पाणिनिमुनिप्रणीतः)– सम्पादकः– पण्डित ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, प्रकाशकः– रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
2. धातुपाठः (पाणिनिमुनिप्रणीतः)– सम्पादकः– पण्डित ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, प्रकाशकः– रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
3. अष्टाध्यायीभाष्यम् (प्रथमावृत्तिः), त्रयो भागाः– लेखकौ– पण्डित ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, प्रज्ञादेवी व्याकरणाचार्या, प्रकाशकः– रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
4. माधवीया धातुवृत्तिः (सायणविरचिता)– सम्पादकः– विजयपालो विद्यावारिधिः, प्रकाशकः– रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
5. काशिका (वामनजयादित्यविरचिता)– सम्पादकः– विजयपालो विद्यावारिधिः, प्रकाशकः– रामलाल कपूर ट्रस्ट, रेवली, सोनीपत, हरियाणा।
6. व्याकरणमहाभाष्यम् (महर्षिपतञ्जलिमुनिविरचितम्, प्रदीपोद्द्योतटीकाद्वयसहितम्), षड् भागाः– सम्पादकः– श्री भार्गव शास्त्री, प्रकाशकः– चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली।